B.A. PART – 1

हिन्दी (प्रतिष्ठा) प्रथम-पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास



प्रश्न :- जैन-साहित्य का संक्षिप्त परिचय दें ।

उत्तर :- श्रावकाचार :-

देवसेन नामक प्रसिद्ध जैन आचार्य ने 933 ई० में इस काव्य की रचना की थी । ये एक अच्छे कवि तथा उच्च कोटि के चिंतक थे । इन्होंने अपभ्रंश में भी "दब्ब-सहाव-पयास" नामक काव्य लिखा था । हिन्दी में लिखित इनकी अन्य रचनाएँ 'लघुनयचक्र' तथा 'दर्शनसार' हैं, जो काव्य की सीमा में नहीं आतीं । "श्रावकाचार" में 250 दोहों में श्रावक-धर्म का प्रतिपादन किया गया है । कवि ने गृहस्थ के कर्त्तव्यों पर भी विस्तार से विचार किया है । इसकी रचना दोहा छन्द में हुई है । एक उदाहरण इस प्रकार है :

जो जिण सासण भाषियउ, सो मइ कहियउ सारु ।
जो पालइ सइ भाउ करि, सो सरि पावइ पारु ।।

भरतेश्वर-बाहुबली रास :

मुनि जिनविजय ने इस ग्रन्थ को जैन-साहित्य की रास-परम्परा का प्रथम ग्रन्थ माना है । इसकी रचना 1184 ई० में शालिभद्र सूरि ने की थी । ये अपने समय के प्रसिद्ध जैन आचार्य तथा अच्छे कवि थे । इस ग्रन्थ में भरतेश्वर तथा बाहुबली का चरित-वर्णन है । ये दोनों चरित-नायक संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश में भी काव्य-रचना का विषय रहे हैं । प्रस्तुत कृति में इनकी जो कथा वर्णित है, उसमें इन्हें अयोध्यावासी ऋषभ जिनेश्वर के यहाँ सुनन्दा और सुमंगला से उत्पन्न बताया गया है । भरत आयु में बड़े थे एवं पराक्रमी भी अधिक थे । वे अयोध्या के राजा बनाये गये और बाहुबली को तक्षशिला का राज्य मिला । कवि ने दोनों राजाओं की वीरता, युद्धों आदि का विस्तार से वर्णन किया है, किन्तु हिंसा और

वीरता के पश्चात विरक्ति और मोक्ष के भाव प्रतिपादित करना कवि का मुख्य लक्ष्य रहा है, अतः वीर और शृंगार रसों का निर्वेद में अन्त हुआ है, २०५ छन्दों में रचित यह एक सुन्दरकाण्ड है, इसकी भाषा में नाटकीयता, उक्ति- वैचित्र्य तथा रसात्मकता के सर्वत्र दर्शन होते हैं, आगे की 'रास' या 'रासो' रचनाओं को इस ग्रन्थ ने अनेक रूपों में प्रभावित किया है, इसकी कविता का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है:

बोल्लह बाहुबली बलवन्त। लोह खण्डि तउ गरविड हंत।
चक्र सरीसउ चूनउ करिउं। सयलहं गोत्रह कुल संहरउं।।

चन्दनबालारास:

यह पैंतीस (३५) छन्दों का एक लघु खण्डकाव्य है, जिसकी रचना १२०० ई० के लगभग) आसगु नामक कवि ने जालौर में की थी। इसकी कथा- नायिका चन्दनबाला चम्पा नगरी के राजा दधिवाहन की पुत्री थी। एक बार कौशाम्बी के राजा शतानीक ने चम्पा नगरी पर आक्रमण किया, जिसमें उसका सेनापति चन्दनबाला का अपहरण कर ले गया और एक सेठ को बेच दिया। सेठ की स्त्री ने उसे अपार कष्ट दिया। चन्दनबाला अपने सतीत्व पर अटल रहकर सब दुःख सहती रही और अन्त में महावीर से दीक्षा लेकर मोक्ष को प्राप्त हुई। इस लघु कथानक पर आधारित यह जैन- रचना करुण रस की गम्भीर व्यंजना करती है। भाव- सौन्दर्य के जितने चित्र इसके रचयिता ने अंकित किये हैं, सभी में उसकी काव्य- निष्ठा व्यंजित है।

स्थूलिभद्ररास:

१२०९ ई० में रचित इस काव्य को जिनधर्मसूरि की कृति माना जाता है, स्थूलिभद्र

और कोशा वेश्या के विषय में अन्य रचनाएँ भी मिलती हैं, किन्तु इस कृति की सभी घटनाओं से उनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है। अवान्तर घटनाओं के माध्यम से लौहघर के रूप में स्थूलिभद्र का संयम चित्रित करके कवि ने काव्य को विशिष्ट बना दिया है। कोशा वेश्या के पास भोग-लिप्त रहने वाले स्थूलिभद्र को कवि ने जैन धर्म की दीक्षा लेने के बाद मोक्ष का अधिकारी सिद्ध किया है। काव्य की भाषा पर अपभ्रंश का प्रभाव अधिक है, फिर भी इसकी भाषा का मूल रूप हिन्दी है। धार्मिक दृष्टि से प्रेरित होने पर भी इसकी भाव-भूमि और अभिव्यंजना काव्यानुकूल है।

रेवंतगिरिरास :

यह विजयसेन सूरि की काव्य-कृति है। 1231 ई० के लगभग लिखित इस काव्य में तीर्थंकर नेमिनाथ की प्रतिमा तथा रेवंतगिरि तीर्थ का वर्णन है। यात्रा तथा मूर्ति-स्थापना की घटनाओं पर आधारित यह 'रास' वास्तुकलात्मक सौन्दर्य का भी आकर्षण प्रस्तुत करता है। प्रकृति के रमणीक चित्र इस काव्य के भाव तथा कलापक्षों का श्रृंगार करते हैं। एक उदाहरण देखिए।

कोयल कलयलो मोर केकारओ,
सम्मर महुयर महुर गुंजारवो।
जलद जाल बंबाले नीझरणि रमाउलु रहेइ,
उज्जिल सिहरन अलि कज्जल सामलु ॥

नेमिनाथरास :-

इस काव्य की रचना सुमतिगणि ने 1213 ई० में की थी। 58 छन्दों की इस रचना में कवि ने नेमिनाथ का चरित्र सरस शैली में प्रस्तुत किया है। नेमिनाथ के प्रसंग में श्रीकृष्ण का वर्णन इस काव्य का विषय है और इन दोनों के माध्यम से विभिन्न भावों की व्यंजना हुई है। रचना की

भाषा अपभ्रंश से प्रभावित राजस्थानी हिन्दी है,

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न !- जैनियों के साहित्य पर एक नोट लिखें ?

पता :-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो० न० - 7909046087
दिनांक - 18.02.2022